शिवशक्ति सरस्वती माँ

1. मम्मा निर्भय बहुत थीं। वह कभी किसी से डरती नहीं थीं, शक्ति स्वरूपा थीं, सदा योगनिष्ठ थीं। कर्मेन्द्रियाँ सदा उनके अधीन थीं। वे सबको मातृप्रेम की भासना देती थीं। आयु में छोटी थीं फिर भी उनसे बड़ी आयु वाले भी उनको मम्मा कहते थे। इतना ही क्यों उनकी लौकिक माँ भी, उनको मम्मा ही कहती थी।

2. मम्मा जब मुरली चलाती थीं तो सब ऐसे तन्मय होकर सुनते थे कि मूर्तिवत् हो जाते थे। मुरली डेढ़ घण्टा चलती थी तो एकाग्रता से बैठ सुनते थे। मम्मा की मुरली इतनी प्यारी होती थी कि बात मत पूछो। पूरे यज्ञ में देखा जाय तो मम्मा बहुत कम बात करती थीं।

3. भोजन क्या है, कैसा है मम्मा यह कभी नहीं देखती थीं। जो मिला उसी को प्यार से स्वीकार कर लेती थीं। कभी यह नहीं कहा कि आज नमक कम है, ज़्यादा है, आज सब्जी अच्छी है, अच्छी नहीं है। खाने के समय मम्मा कभी इधर-उधर नहीं देखती थीं। ऐसे चुपचाप बैठी, खाया और चली गयी। भोजन को प्रसाद के रूप में स्वीकार करती थीं।

4. मम्मा के सामने बाबा कुछ भी बात कहे, कुछ भी सुनाये, मम्मा कभी क्यों, कैसे यह नहीं सोचती थीं। सदा 'जी बाबा', 'हाँ जी बाबा' कहती थीं। इतना रिगार्ड था उनका बाबा के प्रति! बाबा के हर बोल पर मम्मा का अटूट विश्वास था। एक बार किसी ने मम्मा से पूछा, मम्मा, पहले बाबा कहते थे कि जहाँ जीत वहाँ जन्म। आजकल बाबा उसके बारे में कुछ बोलते नहीं, आपका क्या विचार है? तब मम्मा बोली, मेरा विचार कहाँ से आ गया? जो बाबा ने कहा है वही हम सबका विचार है। मम्मा ने कभी अपनी बद्धि का अभिमान नहीं दिखाया।

5. मम्मा ने कभी अपना शो (दिखावा) नहीं किया। वह कितनी सेवा करती थीं लेकिन कभी अपने मुँह से कहा ही नहीं कि मैंने इतनी सेवा की। मम्मा डेढ़ मास सेवा करके बेंगलूर से पूना आयी थीं। उन्होंने बहुत सेवा की थी परन्तु फिर भी नहीं सुनाया कि यह-यह सेवा करके आयी हूँ। मम्मा अपने बारे में, किये हुए कार्य के बारे में कभी दूसरों को नहीं बताती थीं। वे जितना त्यागी थीं, उतना ही वैरागी थीं और उतना ही तपस्वी थीं।